बिहारीलाल

दोहा

देखों जागत वैसियै साँकर लगी कपाट ।
कित ह्वै आवतु जात भजि को जानै किहि बाट ॥

बिहारी विभूति, सं० रामकुमारी मिश्र
इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, Nd:339